अनुक्रमणिका

अनुक्रमणिका

प्रथम अध्याय : ''ज्ञानरंजन : व्यक्तित्व एवं कृतित्व'' पृ. 1-25

1.1. जीवन परिचय।

1.1.1 माता-पिता।

1.1.2. बचपन।

1.1.3. बड़े भाई।

1.1.4. शिक्षा-दीक्षा।

1.1.5. विवाह।

1.1.6. पत्नी।

1.1.7. पुत्र तथा पुत्री।

1.1.8. निवास-स्थान।

1.2. व्यक्तित्व।

1.2.1. अंतरंग व्यक्तित्व।

1.2.1.1. मिलनसार स्वभाव।

1.2.1.2. प्रशंसाहीन।

1.2.1.3. स्वार्थ की गंध से रहित।

1.2.1.4. प्रचार की लालसा नहीं।

1.2.1.5. सत्यवादी।

1.2.1.6. संकटों का सामना।

1.2.1.7. समय की पाबंदी।

1.2.1.8. फिजूलखर्ची।

1.2.1.9. अपने शहर के प्रति आकर्षण।

1.2.1.10. खाने के शौकिन।

1.2.1.11. अच्छा पति।

1.2.1.12. सच्चा दोस्त।

1.2.1.13. धीरज एवं ठोसपन।

1.2.1.14. विविध क्षेत्रों से संबंध।

1.2.1.15. तटस्थता।

1.2.1.16. रूचि।

1.2.1.17. सच्चा देशप्रेमी।

1.2.1.18. षष्टब्दी।

1.2.2. बाह्य व्यक्तित्व।

1.2.2.1. प्रभावी मुखाकृति।

1.2.2.2. वेशभूषा।

1.2.2.3. रहन-सहन।

1.2.2.4. दाढ़ी व्यक्तित्व का अंग।

1.3. कृतित्व

1.3.1. कृतित्व की पहचान।

1.3.2. प्रकाशित रचनाएँ।

1.3.3. कहानी-संग्रह।

1.3.4. रेखाचित्र।

1.3.5. पुरस्कार।

1.4. संपादन कार्य।

निष्कर्ष।

द्वितीय अध्याय : ''ज्ञानरंजन की कहानियों का सामान्य परिचय'' पृ. 26-58

2.1. ज्ञानरंजन के पूर्ववर्ती कहानीकारों तथा उनकी प्रमुख रचनाओं का सामान्य परिचय।

2.1.1. भारतेंदु युग।

2.1.2. द्विवेदी युग।

2.1.3. छायावाद युग।

2.1.4. छायावादोत्तर युग।

2.1.5. नई कहानी।

2.2. समकालीन हिंदी कहानी साहित्य का इतिहास।

2.2.1. तत्कालीन परिवेश।

2.2.1.1. सामाजिक परिवेश।

2.2.1.2. आर्थिक परिवेश।

2.2.1.3. राजनीतिक परिवेश।

2.3. सातवें दशक के कहानीकार।

2.4. ज्ञानरंजन की कहानियों का सामान्य परिचय।

2.5. परवर्ती कहानीकारों के मध्य 'ज्ञानरंजन' का स्थान।

निष्कर्ष।

तृतीय अध्याय : ''ज्ञानरंजन की कहानियों में पारिवारिक जीवन'' पृ. 59-91

3.1. प्रस्तावना।

3.2. परिवार : उत्पत्ति।

3.3. परिवार : परिभाषा।

3.4. परिवार : महत्त्व।

3.5. परिवार : प्रकार।

3.6. विवेच्य कहानियों में पारिवारिक जीवन।

3.7. पारस्पारिक संबंध।

3.7.1. पति-पत्नी संबंध।

3.7.2. पिता-पुत्र संबंध।

3.7.3. पिता-पुत्री संबंध।

3.7.4. माता-पुत्र संबंध।

3.7.5. माता-पुत्री संबंध।

3.7.6. भ्रातृत्व संबंध।

3.7.7. भाई-बहन संबंध।

3.7.8. सास-बहू संबंध।

3.7.9. देवर-भाभी संबंध।

3.8. परिवार विघटन।

3.9. रिश्तों में अंतर।

3.10. टूटते दांपत्य संबंध।

निष्कर्ष।

चतुर्थ अध्याय : ''ज्ञानरंजन की कहानियों में सामाजिक जीवन'' पृ. 92-133

4.1. प्रस्तावना।

4.2. समाज : स्वरूप, महत्त्व, परिभाषा।

4.3. दिशाहीन युवक।

4.4. पीढ़ियों का संघर्ष।

4.5. बदलते मूल्य।

4.6. प्रेम की विद्रुपता।

4.6.1. देहाकर्षण।

4.6.2. ऊब मिटाने के लिए प्रेम : प्रेम में ऊब।

4.6.3. स्वार्थ आधारित प्रेम।

4.6.4. प्रेम में असफलता और उसके बाद।

4.6.5. अवैध यौन।

4.7. महानगरीय खोखली चकाचौंध।

4.8. अकेलापन।

4.9. संत्रास।

4.10. घुटन।

4.11. अजनबीपन।

4.12. व्यक्तिवाद।

4.13. गुंड़ागर्दी।

4.14. मध्यवर्गीय जीवन की विड़ंबना।

4.15. अंधश्रद्धा।

4.16. राजनेताओं द्वारा सामाजिक शोषण एवं अनाचार।

4.17. आर्थिक संघर्ष।

4.18. पराधीनता।

4.19. सामाजिक रूढ़ि परंपराएँ।

4.20. विवाह।

निष्कर्ष।

पंचम अध्याय : ''ज्ञानरंजन की कहानियों का शिल्प'' पृ. 134-150

5.1. शिल्प से तात्पर्य।

5.2. ज्ञानरंजन की कहानियों का शिल्प।

5.2.1. कथाशिल्प।

5.2.2. चरित्र शिल्प।

5.2.2.1. वर्णन द्वारा।

5.2.2.2. संकेत द्वारा।

5.2.2.3 कथोपकथन द्वारा।

5.2.2.4. घटना व्यापार द्वारा।

5.2.3. संवाद योजना।

5.2.3.1. मुद्राओं के संकेत द्वारा।

5.2.3.2. स्थितियों और घटनाओं द्वारा।

5.2.4. वातावरण।

5.3. भाषा।

5.3.1. शब्द प्रयोग के विभिन्न रूप।

5.3.1.1. संस्कृत।

5.3.1.2. देशज।

5.3.1.3. विदेशी शब्द।

5.3.1.3.1. अंग्रेजी शब्द।

5.3.1.3.2. अरबी शब्द।

5.3.1.3.3. फारसी शब्द।

5.3.1.4. अन्य शब्द।

5.3.1.4.1. ध्वन्यार्थक शब्द।

5.3.1.4.2. निरर्थक शब्द।

5.3.1.4.3. द्विरूक्त शब्द।

5.3.1.4.4. अपशब्द।

5.3.2. भाषा सौंदर्य के साधन।

5.3.2.1. आलंकारिक भाषा।

5.3.2.1.1. उपमा।

5.3.2.1.2. प्रतीकात्मक।

5.3.2.1.3. बिंब।

5.3.2.1.4. मुहावरें - कहावतें।

5.3.3. शैली।

5.3.3.1. शैली से तात्पर्य।

5.3.3.1.1. आत्मकथात्मक शैली।

5.3.3.1.2. वर्णनात्मक शैली।

5.3.3.1.3. डायरी शैली।

5.3.3.1.4. व्यंग्यात्मक शैली।

5.3.3.1.5. मनोविश्लेषणात्मक शैली।

5.3.3.1.6. प्रतीकात्मक शैली।

5.3.3.1.7. फ्लैश-बैक शैली।

5.3.3.1.8. काव्यात्मक शैली।

5.3.3.1.9. सांकेतिक शैली।

निष्कर्ष।

उपसंहार पृ. 157-166

संदर्भ ग्रंथ सूची पृ. 167-169